स्मृति

पाठ का सार

‘स्मृति’ कहानी का शीर्षक यह स्पष्ट कर देता है कि प्रस्तुत कहानी की घटना लेखक को जीवन भर याद रही। इस कहानी में लेखक और उनके छोटे भाई दोनों खेल-कूद में व्यस्त हैं। उन व्यस्तता के क्षणों में ही एक आवाज दूर से आती है। एक आदमी शोर से चिल्लाकर लेखक का नाम लेकर पुकारता है और यह संकेत देता है कि बड़े भाई साहब ने उसे बुलाया है। लेखक का हृदय बड़े भाई से पिटने की आशंका से भयग्रस्त है। मक्खनपुर पोस्ट आॅफिस में जाकर डाल आना है। लेखक तत्क्षण तैयार हो जाते हैं और अपने छोटे भाई को और अपना एक डंडा भी साथ ले लेते हैं। लेखक उस लाठी को नारायण वाहन मानते हैं। आगे जो घटनाक्रम है उसमें भी सचमुच वह लाठी नारायण-वाहन सिद्ध होती है।

लेखक काफी तेजी से दौड़ते हुए मक्खनपुर की ओर छोटे भाई के साथ चल पड़ते हैं। दोनों भाई एक ही साँस में गाँव से चार फर्लांग दूर उस कूएँ के पास आ जाते हैं जिसमें एक भयंकर साँप रहता है। वह कूआँ कच्चा है और चैबीस हाथ गहरा है। दोनों भाई उस कूएँ पर पहुँच जाते हैं। बाल-सुलभ कौतुक के चक्कर में फँस कर दोनों भाई कूएँ में साँप का दृश्य देखने के लिए झाँकने लगते हैं। इसी क्रम में सिर पर रखी टोपी को बार-बार उतारना पड़ता है जिसमें चिट्ठियाँ सुरक्षित रखी गई थीं। दुर्भाग्य से टोपी रखने-उतारने के क्रम में तीनों चिट्ठियाँ कूएँ में गिर जाती हैं। चिट्ठियों के कूएँ में गिर जाने के बाद लेखक की स्थिति काफी दयनीय हो जाती है। लेखक उन चिट्ठियों को गिरते हुए देख उसे पकड़ने के लिए कूएँ में ऐसे ही लपकते हैं जैसे घायल शेर शिकारी को पेड़ पर चढ़ते देख उस पर हमला करता है।